

## माँ की भावना

(पुस्तक के कुछ अंश)

आज पार्थ के परम मित्र की पुत्री का विवाह समारोह था। उसने बहुत आग्रह कर बुलाया था। पार्थ की पत्नी तो कई दिनों से इसके लिए तैयारी कर रही थी। शाम को सजधज कर दोनों विवाह समारोह में पहुंचे। जैसा कार्ड था उसी अंदाज में विवाह समारोह का भव्य आयोजन किया गया था। शहर की प्रसिद्ध पांच सितारा होटल के प्रांगण में कार्यक्रम आयोजित किया गया था। समारोह स्थल रौशनी में नहाया हुआ था। आगरा के प्रसिद्ध कैटरर्स को विशेष रूप से बुलाया गया था। प्रसिद्धि के अनुरूप ही एक से बढ़कर एक व्यंजन नाम की प्लेट सहित सजाये गये थे।  
आगे.....

आज पार्थ के परम मित्र की पुत्री का विवाह समारोह था। उसने बहुत आग्रह कर बुलाया था। पार्थ की पत्नी तो कई दिनों से इसके लिए तैयारी कर रही थी। शाम को सजधज कर दोनों विवाह समारोह में पहुंचे। जैसा कार्ड था उसी अंदाज में विवाह समारोह का भव्य आयोजन किया गया था। शहर की प्रसिद्ध पांच सितारा होटल के प्रांगण में कार्यक्रम आयोजित किया गया था। समारोह स्थल रौशनी में नहाया हुआ था। आगरा के प्रसिद्ध कैटरर्स को विशेष रूप से बुलाया गया था। प्रसिद्धि के अनुरूप ही एक से बढ़कर एक व्यंजन नाम की प्लेट सहित सजाये गये थे। दोस्त और उनकी पत्नी पार्थ और साक्षी से गर्मजोशी से मिले और आग्रह पूर्वक विभिन्न प्रकार के सलादों, अचार और खाने की प्लेटों से सजे काउंटर तक लेकर आये और खाने में कंजूसी नहीं करने की हिदायत नहीं देते हुए वापस मेहमानों की आगवानी में चले गये। पार्थ और साक्षी ने प्लेट में पसंदीदा पकवान लेकर खाने के लिए खाली टेबल पर बैठ गए। खाना शुरू करने के साथ ही दूसरे शहर की कॉलेज में पढ़ाई कर रही बेटी को साक्षी ने फ़ोन लगाया

"खाना खा लिया बेटा?"

"माँ आजकल मेस में बिलकुल खराब खाना मिल रहा है।" बेटी की आवाज में उदासी थी।

"बेटा कॉलेज वाले मेस की फीस तो अच्छी खासी लेते हैं।" साक्षी ने कोर मुँह में डालते हुए कहा।

"हाँ, लेकिन यहाँ दाल में पानी में तो कोई कंजूसी नहीं करते बस दाल ही नहीं डालते। रोटियाँ भी आधी कच्ची हैं। मैं ढंग से नहीं खा पाई।" बेटी की शिकायत भरी आवाज़ थी।

सुनकर साक्षी का पहला कोर ही गले में अटक गया। वह भर्राई हुई बोली

"पार्थ मेरी बेटी ढंग से नहीं खा पायी और मैं यहाँ इतने पकवान लिए बैठी हूँ। ये मेरे गले नहीं उतरेंगे।"

"अरे यार हॉस्टल में हम भी रहे हैं। ऐसा ही खाना हमने भी खाया है। ये आम बात है।" पार्थ ने समझाने की कोशिश की लेकिन साक्षी बिना खाना खाये उठ गई और तेजी से बाहर की ओर चल दी। पीछे पीछे पार्थ भी जो हाथ में था उसे मुँह में दबाकर चल दिया। घर पहुँचने पर माँ उनके हाव भाव से समझ गई थी कुछ ठीक नहीं है। पूछने पर पार्थ माँ से साक्षी के बचपने की शिकायत करता हुआ बोला

"माँ हॉस्टल में मैं भी रहा हूँ। मैंने तो कभी नहीं सुना आप मेरी चिंता में कभी ऐसे किसी समारोह में खाना छोड़ कर उठी हों।"

पार्थ की बातें दूरसे सुन कर सुन रहे उसके पिता विचलित हो कर बोल उठे

"नहीं बेटा उस जमाने इतनी समृद्धि कहाँ थी कि ऐसा अवसर मिले कि ऐसे पकवान बने और कोई बीच में उठे। तेरी मेस की फीस इकट्ठा करने के लिए तेरी माँ ने दुनिया के सारे उपवास ढूँढ निकाले थे। देवता भी भला मान गए और तू पढ़ भी गया। हम नहीं समझ पाएंगे लेकिन न जाने क्यों ये ऐसी ही होती हैं।"

सास ने प्यार से साक्षी के सिर को सहलाया। बहुत प्रयास और कसम के बाद भी कसम तोड़ने के नाम पर साक्षी रोटी का एक कोर ही खिला पाई। साक्षी पूरी रात बेटी की चिंता में करवट बदलती रही। सुबह जाकर थोड़ी देर के लिए हलकी सी आँख लगी। उसमें भी वह बेटी को सपने में गरमा गरम रोटी दे कर उसकी पसंदीदा मटर पनीर की सब्जी परोसती रही। नींद में भी उसके हाथ हिल रहे थे और होठ बड़बड़ा रहे थे। पार्थ उठ गया था। उसने देखा साक्षी का फोन सिरहाने रखा था। उसमें बेटी के मैसेंजर पर फोटो भेजने के नोटिफिकेशन आये हुए थे। पार्थ ने फोन उठा कर फोटो देखी। बेटी ने देर रात मनाई पार्टी की फोटो डाली हुई थी और मैसेज भी भेजा हुआ था जिसमें लिखा था

"ममा, रात को हमने बारह बजे यहाँ मेरी नई बेस्ट फ्रेंड प्रेरणा का बर्थडे मनाया और पार्टी की। बहुत मज़ा आया ममा"

पार्थ को पहली बार बेटी की फोटो देखकर खुशी नहीं हुई थी। उसने सारी फोटो डिलीट कर फोन वापस साक्षी के सिरहाने रख दिया और मन ही मन बड़बड़ाया "न जाने क्यों बच्चे माँ की भावना को कभी उस शिद्धत से महसूस नहीं कर पाते।"

